



मलहार

कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक



671



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0671 – मल्हार

कक्षा 6 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-946-7

प्रथम संस्करण

जून 2024 ज्येष्ठ 1946

PD 1000T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2024

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन
प्रभाग में प्रकाशित तथा शगुन ऑफ़सेट प्रा. लि.,
प्लॉट न. 82, इकोटेक -12, ग्रेटर नोएडा 201 009
(उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस

श्री अरविंद मार्ग

नई दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेशन, होम्डेकेरे

बनारशंकरी III इस्टेज

बेंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस

निकट : धनकल बस स्टॉप पनहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781 021

फोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

उत्पादन अधिकारी : जहान लाल

आवरण एवं ले-आउट

बैनियन ट्री

चित्रांकन

जोएल गिल

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक परिवर्तनकारी पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संरचना की अनुशंसा करती है जिसके मूल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और भारतीय ज्ञान परंपरा निहित है। यह नीति विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी की संभावनाओं और चुनौतियों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ने के लिए तैयार करती है। नई शिक्षा नीति में निहित चुनौतियों और सुझावों को आधार बनाते हुए विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में सभी स्तरों की पाठ्यचर्या क्षेत्रों को तैयार किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2023 का उद्देश्य है कि बुनियादी और आरंभिक स्तर पर बच्चों के पंचकोशीय विकास को सुनिश्चित करते हुए मध्य स्तर पर उनके विकासात्मक स्वरूप को अग्रसर किया जाए। इस प्रकार, मध्य स्तर कक्षा 6 से कक्षा 8 तक तीन वर्षों को समाहित करते हुए आरंभिक और माध्यमिक स्तरों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है।

मध्य स्तर पर इस राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का उद्देश्य है, विद्यार्थियों को उन आवश्यक कौशलों में दक्ष करना जो बच्चों की विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और सृजनात्मक क्षमताओं को प्रोत्साहित करे और उन्हें आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करे। मध्य स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पर विकसित बहुआयामी पाठ्यक्रम में ऐसे नौ विषयों को शामिल किया गया है जो बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। इसमें तीन भाषाओं (कम से कम दो भारतीय मूल की भाषाएँ) सहित विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा एवं कल्याण और व्यावसायिक शिक्षा शामिल हैं।

ऐसी परिवर्तनकारी शिक्षण संस्कृति के लिए अनुकूल परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसे व्यावहारिक रूप देने के लिए विभिन्न विषयों की उपयुक्त पाठ्यपुस्तकें भी होनी चाहिए। पाठ्यसामग्री और पढ़ने-पढ़ाने के उपागमों के बीच इन पाठ्यपुस्तकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। ऐसी निर्णायक भूमिका जो बच्चों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति के बीच एक विवेकपूर्ण संतुलन बनाएगी। कक्षा नियोजन और विषयों की पढ़ाई के बीच उचित संतुलन बनाने के लिए शिक्षकों की तैयारी भी आवश्यक है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निरंतर गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकें तैयार करने के लिए एक प्रतिबद्ध संस्था है। पाठ्यपुस्तकों के निर्माण हेतु संबंधित विषय विशेषज्ञों, शिक्षाशास्त्रियों और अध्यापकों को समितियों में शामिल किया जाता है। कक्षा 6 के लिए निर्मित

‘मल्हार’ पुस्तक में साहित्य की प्रमुख विधाएँ सम्मिलित हैं। ये रचनाएँ देशप्रेम, पर्यावरण, विज्ञान, कला, इतिहास, खेल और भारतीय समाज के अनुभवों का भाषिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुतियों और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का अनुपालन करते हुए यह पाठ्यपुस्तक बच्चों में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, रचनात्मकता, आधारभूत मानवीय मूल्यों और प्रवृत्तियों के विकास पर समान बल देती है, जो राष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के साथ ही समावेशन, बहुभाषिकता, जेंडर समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के साथ-साथ सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उचित समन्वयन और स्कूल-आधारित समग्र मूल्यांकन आदि समस्त विषयों से संयोजित होने वाले क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। इसमें दी गई गतिविधियों और प्रश्न अभ्यासों को बच्चे स्वयं तथा सहपाठियों के साथ समूह में सीखेंगे। सहपाठियों के समूह में सीखना न केवल रोचक होता है अपितु यह बहुत महत्वपूर्ण भी है क्योंकि इससे बच्चों का बहुआयामी विकास होता है, साथ ही सीखने की प्रक्रिया रोचक ही नहीं अपितु आनंदमय और सहज हो जाती है। इस बहुआयामी पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री और गतिविधियाँ विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को सृजनात्मक अनुभव से संपृक्त करने में सक्षम हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के अलावा इस स्तर पर विद्यार्थियों को विभिन्न अन्य शिक्षण संसाधनों का पता लगाने हेतु भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसे संसाधन उपलब्ध करने में विद्यालय के पुस्तकालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को ऐसा करने के लिए मार्गदर्शन और प्रोत्साहित करने में अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी व्यक्तियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित है। हम आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करते हैं जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

दिनेश प्रसाद सकलानी

नई दिल्ली

निदेशक

31 मई 2024

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

यह पुस्तक

सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया में भाषा का केंद्रीय स्थान है। भाषा की शिक्षा ही विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करती है। किसी भी नागरिक से क्या-क्या अपेक्षाएँ होती हैं, इन्हें ध्यान में रखते हुए औपचारिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी चरणों में भाषा शिक्षण के मुख्य लक्ष्य इस तरह से रेखांकित किए जा सकते हैं— सृजनशीलता; ज्ञान परंपरा और प्रयोग; स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतन; राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना; और स्वास्थ्य एवं खुशहाली। भाषा की सृजनशीलता से आशय है कि विद्यार्थियों में भाषा के संवादधर्मी स्वरूप के रचनात्मक पक्ष के प्रति समझ बने और वे विभिन्न वैयक्तिक, सामाजिक, सांस्कृतिक निर्मितियों के अनुरूप भाषा का सृजनशील प्रयोग कर सकें। विद्यार्थी अपनी बात को अपने ढंग से कह सकें और अपनी स्वाभाविक सृजनशीलता एवं कल्पना को पोषित कर सकें। ज्ञान-परंपरा और प्रयोग भाषा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसमें परंपरागत ज्ञान और उसका अभिनव प्रयोग शामिल है जिससे विद्यार्थियों में अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं के प्रति विवेकपूर्ण सुरुचि पैदा हो सके। भाषा पढ़ने-पढ़ाने का लक्ष्य यह भी है कि विद्यार्थी स्वतंत्र अध्येता एवं आलोचनात्मक चिंतक बनें। साथ ही साथ वर्तमान और अतीत की घटनाओं का तार्किक विश्लेषण कर सकें। विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना के विकास को ध्यान में रखते हुए परिवेशीय सजगता व आत्मीय सम्बद्धता का भाव पैदा हो, जो भारतीय सभ्यता और अस्मिता निर्माण की बहुविध रंगतों की सतत निर्मिति है। भाषा को समझने की क्षमता विकसित करना व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करना भी है। स्वास्थ्य एवं खुशहाली से आशय है कि विद्यार्थी शारीरिक व मानसिक रूप से स्फूर्त हों, उनमें स्वस्थ दृष्टिकोण एवं आदतों का विकास हो और भावनात्मक एवं सामाजिक रूप से परिपक्वता आए। भाषा का सीखना-सिखाना सभी विषय क्षेत्रों के प्रति समझ बनाने के साथ-साथ शिक्षार्थी के भावात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण हो तथा वे भाषिक, प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण, खेल, कला, विज्ञान, पर्यटन और नीति के प्रति सचेत हो।

कक्षा 6 की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'मल्हार' आपको सीखने-सिखाने की एक अनोखी और आनंददायक यात्रा पर ले जाने के लिए तैयार की गई है। यह पुस्तक आज के विद्यार्थियों, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं, रुचियों और अपेक्षाओं को पूरा करने के उद्देश्य से विकसित की गई है। हमारे विद्यार्थी अपने आस-पास के समाज, अपने महान राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास और

संस्कृति को समझ सकें, भारत की लोकतांत्रिक, प्रेम, भाईचारे, पर्यावरण संरक्षण, जेंडर समानता, वसुधैव कुटुंबकम, शांति और सहिष्णुता की हज़ारों वर्षों पुरानी परंपराओं और विरासत को आगे बढ़ा सकें और अपने दैनिक जीवन में हिंदी का आत्मविश्वासपूर्वक उपयोग कर सकें, इसके लिए पुस्तक में पर्याप्त सामग्री दी गई है। सामग्री चयन में भारत के विभिन्न राज्यों, कलाओं, परिवेश का भी समावेश किया गया है।

इस पुस्तक में हिंदी साहित्य की अनेक प्रसिद्ध रचनाओं को सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी हिंदी साहित्य के गौरवशाली और समृद्ध इतिहास से परिचित हो सकें और एक जागरूक पाठक बनने की दिशा में अग्रसर हो सकें। इस पुस्तक की रचना करते समय इस बात को ध्यान में रखा गया है कि यह आज के भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप सक्षम, आत्मविश्वास से पूर्ण और चिंतनशील नागरिक के निर्माण में सहायक हो सके।

इस पुस्तक का पूर्ण-क्षमताओं के साथ उपयोग करने के लिए अध्यापकों को इसके निम्नलिखित पक्षों के बारे में जान लेना होगा—

बहुभाषिकता हमारे देश की अनूठी विशेषता और ताकत है। इस पुस्तक में बहुभाषिकता के कई स्वरूप मिलेंगे। विभिन्न भाषाओं का समन्वय, भारतीय भाषाओं की एकात्मकता, विभिन्न साहित्यिक अभिव्यक्तियों या विषयों का समन्वय, हिंदी भाषा के भिन्न-भिन्न रूपों का समन्वय, अनुवाद में भाषाएँ आदि। अपेक्षा है कि पढ़ने-पढ़ाने के संदर्भ में बहुभाषिक स्रोतों या संदर्भों को एक ताकत और अवसर की तरह प्रयोग कर सकें।

पुस्तक के चित्र रचनाओं को समृद्ध करने के दृष्टिकोण से दिए गए हैं। ये पाठ के संदर्भों को नए विस्तार और आयाम देते हैं तथा समझने-समझाने में आसान बनाते हैं। इन चित्रों पर बातचीत, लेखन और अन्य गतिविधियों के लिए सुझाव पुस्तक में जगह-जगह पर दिए गए हैं। अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए स्वयं भी अनेक गतिविधियों की रचना की जा सकती है।

पुस्तक में संदर्भ में व्याकरण की स्तरानुकूल अवधारणाएँ सम्मिलित की गई हैं। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस कक्षा-स्तर पर व्याकरण का उद्देश्य विद्यार्थियों को परिभाषाओं को याद करवाना न होकर उन्हें दैनिक जीवन में भाषा का प्रभावशाली उपयोग कर सकने में सक्षम बनाना है। विद्यार्थियों का भाषाई प्रयोगों पर ध्यान जाए, उनका शब्द-भंडार विकसित हो, वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए अनुकूल और संगत भाषा का प्रयोग कर सकें, इसके लिए अनेक रोचक गतिविधियाँ पुस्तक में सम्मिलित की गई हैं।

पाठों को संवादात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है कि विद्यार्थी इस पुस्तक को एक मित्र और अनुभवी मार्गदर्शक के रूप में देख सकें। इसलिए अनेक स्थानों पर पुस्तक पाठकों से

वार्तालाप करती हुई प्रतीत होती है। यह संवादात्मक शैली पुस्तक को सहज, सरल और उपयोगी बनाने में सहायक है। यही सहजता पुस्तक के अभ्यासों में भी दिखाई देती है।

मौलिक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर देते हुए पुस्तक के अनेक प्रश्नों में विद्यार्थियों को उनके अपने विचारों को बोलकर और लिखकर अभिव्यक्त करने के अवसर दिए गए हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में उनके विचारों को सम्मानपूर्वक सुना जाए। भले ही किसी विद्यार्थी के विचार सबसे अलग हों, फिर भी तर्कों और उदाहरणों द्वारा उसे उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करना आवश्यक है।

पठन के तरीके को विस्तार देते हुए पुस्तक में दिए गए पाठ कई प्रकार के हैं। यह पुस्तक फिल्म, चित्रात्मक सूचना, पोस्टर सभी को पढ़ने की ओर ध्यान दिलाती है। सभी के पढ़ने के अलग-अलग तरीके होते हैं। पठन विस्तार की दृष्टि से पुस्तकालय, वेबलिंग इत्यादि की ओर भी ध्यान दिलाया गया है।

पुस्तक में अनेक रोचक समावेशी गतिविधियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों को उनमें से कुछ गतिविधियों को अकेले करना होगा, कुछ को अपने समूह में और कुछ को पूरी कक्षा को मिलकर करना होगा। पुस्तक की अनेक गतिविधियों को करने के लिए विद्यार्थियों को अपने समूह के साथ चर्चा करनी होगी। इसके लिए आवश्यक है कि समय-समय पर कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाए जाएँ। एक समूह में 4 से 8 विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं। यदि कक्षा में विशेष रूप से सक्षम या दिव्यांग (शारीरिक या मानसिक) विद्यार्थी हैं तो वे भी इन्हीं समूहों में होने चाहिए। अभ्यास को इस प्रकार निर्मित किया गया है कि सभी तरह के विद्यार्थी (दिव्यांग सहित) उसे करने में सक्षम होंगे।

पुस्तक के प्रत्येक प्रश्न के साथ एक चित्रात्मक संकेत (आइकॉन) दिया गया है। इससे विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलेगी कि उस प्रश्न में उन्हें क्या करना है— चर्चा करनी है, लिखना है, बोलकर उत्तर देना है या कोई गतिविधि करनी है। इसलिए सत्र के प्रारंभ में ही विद्यार्थियों को इन चित्र-संकेतों के अर्थ और उपयोग समझा दें।

हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना एक महत्वपूर्ण कौशल है। इस कौशल के विकास के लिए पुस्तक के अंत में शब्दकोश दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी कक्षा 6 से ही हिंदी शब्दकोश का उपयोग करना प्रारंभ कर दें। इस शब्दकोश में पुस्तक के विभिन्न पाठों में आए ऐसे शब्दों को स्थान दिया गया है जो कक्षा 6 के अधिकांश बच्चों के लिए नए या अपरिचित हो सकते हैं। शब्दकोश के साथ हिंदी वर्णमाला और देवनागरी लिपि के भारतीय ब्रेल रूप 'भारती' को भी दिया गया है ताकि विद्यार्थी देवनागरी के ब्रेल रूप के प्रति जागरूक हो सकें।

पाठ की संरचना

पाठ— सबसे पहले पाठ का शीर्षक, पाठ संख्या और मूल पाठ दिया गया है। निबंध पाठों में पाठ का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

रचनाकार से परिचय— रचना के अंत में रचनाकार का स्तरानुरूप 4-5 पंक्तियों में सरल, सृजनात्मक परिचय दिया गया है। यह परिचय सूचनात्मक न होकर सृजनात्मक लेखन के उदाहरण हैं ताकि विद्यार्थियों को परिचय लेखन के विविध रूपों और सृजनात्मक लेखन का आनंद लेने के अवसर मिल सकें। यह परिचय लेखक की जीवनी न होकर उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के किन्हीं विशेष पक्षों का रोचक वर्णन है। इस बात पर विशेष ध्यान दें कि यह परिचय विद्यार्थियों की औपचारिक (लिखित) आकलन प्रक्रिया का अंग नहीं है।

गतिविधियाँ और अभ्यास— पाठ और रचनाकार के परिचय के बाद गतिविधियाँ और अभ्यास दिए गए हैं। इन्हें सीखने की प्रक्रिया के अंग के रूप में दिया गया है। ये गतिविधियाँ 'सीखने का आकलन' न होकर 'सीखने के लिए आकलन' सिद्धांत पर आधारित हैं। इन गतिविधियों से विद्यार्थियों को पाठ को समझने में, उसे अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने में और अपनी भाषाई कुशलताओं को प्रखर करने में सहायता मिलेगी। इन अभ्यासों में अनेक स्थानों पर विद्यार्थियों के लिए संकेत भी दिए गए हैं जिनसे उन्हें चर्चा करने और अपने मौलिक उत्तरों तक पहुँचने में सहायता मिलेगी। यहाँ अनेक प्रश्न ऐसे हैं जिनके अनेक उत्तर हो सकते हैं क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी के अनुभव और कल्पना अन्य विद्यार्थियों से भिन्न हो सकती है। अपेक्षा है कि आप मौलिक उत्तरों का कक्षा में स्वागत करें और उनकी सराहना हो।

मेरी समझ से— इस गतिविधि में विद्यार्थियों को 2-3 बहुविकल्पी प्रश्नों को हल करने के अवसर दिए गए हैं। ये प्रश्न इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि इनके उत्तर चुनने के लिए विद्यार्थियों को पूरे पाठ को समझने के अपने कौशलों के प्रयोग करने के अवसर मिल सकें। हो सकता है कि किसी प्रश्न के लिए विद्यार्थी अपनी समझ से अलग-अलग विकल्प चुन लें। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को अपने उत्तर को चुनने के कारण स्पष्ट करने के लिए कहा गया है ताकि उनके मौखिक अभिव्यक्ति के कौशल, तर्क करने, उदाहरण देने, सुनने और उसका विश्लेषण करने जैसे महत्वपूर्ण भाषाई कौशलों का विकास हो सके। इस चर्चा के आधार पर विद्यार्थी एक सर्वसम्मत विकल्प के चयन तक पहुँचने में सक्षम हो सकेंगे।

मिलकर करें मिलान— प्रत्येक पाठ में कुछ ऐसे संदर्भ सम्मिलित रहते हैं जो उस पाठ को और समृद्ध बना देते हैं। उदाहरण के लिए 'मातृभूमि' कविता में राम, गौतम, हिमालय आदि अनेक संदर्भ आए हैं। यदि विद्यार्थी पाठ में आए ऐसे संदर्भों पर ध्यान दे सकें तो वे पाठ को और अच्छी तरह समझ सकेंगे। इसलिए इस प्रश्न में पाठ में से चुनकर कुछ ऐसे शब्दों या शब्द-समूहों को दिया गया है जिनका अर्थ या संदर्भ जानना-समझना पाठ को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है। इनकी व्याख्या भी दे दी गई है। विद्यार्थियों को इन शब्दों को उनके संदर्भों से मिलान करना है। यह कार्य वे स्वयं, शिक्षकों, अभिभावकों, पुस्तकालय और इंटरनेट की सहायता से कर सकेंगे।

पंक्तियों पर चर्चा— इस गतिविधि में पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें और इन पर विचार करें। उन्हें इनका क्या अर्थ समझ में आया, उन्हें अपने विचार अपने समूह में साझा करने हैं और अपनी लेखन पुस्तिका में लिखना है। इस प्रकार इस गतिविधि में उन्हें सुनने, बोलने और लिखने-पढ़ने के भरपूर अवसर मिलेंगे।

सोच-विचार के लिए— इस प्रश्न में विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे पाठ पर आधारित बोध-प्रश्नों पर स्वयं सोच-विचार करेंगे और स्वतंत्र रूप से उनके उत्तर अपनी लेखन पुस्तिका में लिख सकेंगे। आवश्यकता होने पर इस कार्य में भी विद्यार्थियों को शिक्षकों का उत्साहवर्धन और सहयोग अपेक्षित है।

साहित्य की रचना— इस प्रश्न द्वारा विद्यार्थियों को साहित्य की विधा-विशेष की विशेषताओं और संरचनात्मक पहलुओं की ओर ध्यान देने का अवसर मिलेगा। इसके लिए हो सकता है उन्हें पाठ को एक बार पुनः ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता का अनुभव हो। उन्हें पाठ की जो बातें विशेष लगेंगी, उन्हें वे आपस में साझा करेंगे और लिख लेंगे। इस प्रकार पूरी कक्षा की एक विस्तृत सूची तैयार हो जाएगी। उदाहरण के लिए, संभव है कि कविताओं में वे अलंकारों की शब्दावली या नामों के परिचय के बिना भी पहचान कर लें कि इस पंक्ति में तीन-चार शब्द एक ही अक्षर से शुरू हो रहे हैं। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यहाँ इस गतिविधि में भी एक उदाहरण दे दिया गया है।

अनुमान या कल्पना से— इस गतिविधि में पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिनके उत्तर पाठ में सीधे-सीधे नहीं मिल सकते हैं। इनके उत्तर खोजने के लिए विद्यार्थियों को पाठ के संदर्भों, अपनी कल्पना और अनुमान का सहारा लेना होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को विस्तार देने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होंगे।

शब्दों की बात— विद्यार्थियों का शब्द-भंडार बढ़ाना और भाषा-शब्दों का सार्थक उपयोग करने का कौशल विकसित करना भाषा शिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में से एक है। इसी दृष्टिकोण से यहाँ शब्दों से जुड़ी कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं। यहाँ संदर्भगत व्याकरण की भी कुछ स्तरानुकूल अवधारणाएँ दे दी गई हैं। इन्हें करने के लिए विद्यार्थी शब्दकोश, अपने शिक्षकों और साथियों की सहायता भी ले सकते हैं।

आपकी बात— जब हम किसी साहित्यिक रचना को अपने जीवन से जोड़ पाते हैं तो वह भी हमारे जीवन और अनुभव संसार का अभिन्न अंग बन जाती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को इस प्रश्न के अंतर्गत पाठ के संदर्भों को अपने जीवन और अनुभवों से जोड़ने के अवसर दिए गए हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करने के अवसर मिलेंगे और इससे उनका भाषा की कक्षा से जुड़ाव और प्रबल हो सकेगा। ये प्रश्न मौखिक रूप से चर्चा और संवाद को कक्षा में स्थान देने की दिशा में एक और प्रभावशाली कदम हैं।

आज की पहेली— पहेलियाँ किसी भी भाषा के मौखिक और लिखित साहित्य का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। ये समाज, संस्कृति और इतिहास का अभिन्न अंग होती हैं। भारत की प्रत्येक भाषा के पास पहेलियों की अनूठी धरोहर और संपदा उपलब्ध है। इसी संपदा को हमारे विद्यार्थियों तक पहुँचाने के दृष्टिकोण से प्रत्येक पाठ में एक अनोखी और रोचक पहेली को हल करने का अवसर विद्यार्थियों को दिया गया है। इससे उन्हें स्वयं भी पहेलियों की रचना करने, उन्हें बूझने और उनका आनंद उठाने के अनुभव प्राप्त हो सकेंगे।

झरोखे से— भाषा की पुस्तक अपने आप में एक माध्यम है साहित्य की दुनिया की झलक विद्यार्थियों को दिखलाने का। यह झलक जितनी समृद्ध हो सके, उतना विद्यार्थियों के भाषाई विकास के लिए अच्छा होगा। भाषा की पाठ्यपुस्तक की कुछ सीमाएँ भी हैं। इसमें असीमित सामग्री को स्थान नहीं दिया जा सकता। इसी सीमा को कुछ असीम बनाने का प्रयास है झरोखा। यहाँ पाठ के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कुछ ऐसी रचनाएँ दी गई हैं जो पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और समझ को और अधिक विस्तार दे सकेंगी। ये रचनाएँ ऐसे झरोखे हैं जिनसे झाँककर विद्यार्थी साहित्य की विशाल दुनिया का आनंद उठा सकेंगे। दूसरी ओर इन झरोखों के माध्यम से साहित्य, कक्षा और विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश पा सकेगा।

साझी समझ— झरोखे में दी गई रचनाओं को पढ़ने के बाद विद्यार्थी अवश्य ही उनके बारे में अपने विचार साझा करना चाहेंगे। ऐसे अवसर देता है गतिविधियों का यह भाग 'साझी समझ'।

इसके अंतर्गत 'झरोखे से' में दी गई रचनाओं के किसी विशेष पक्ष या पूरी रचना पर विद्यार्थी अपने-अपने समूह में चर्चा करेंगे और उसे कक्षा में सबके साथ साझा करेंगे।

पुस्तक को शिक्षण का आधार बनाते समय यह ध्यान देना होगा कि भाषा का परिदृश्य समय के साथ-साथ तेजी से बदल रहा है। भाषा के स्वरूप, उसके अध्ययन के उद्देश्य तथा शिक्षण के तौर-तरीकों से लेकर आकलन की पद्धतियों तक में नित नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भाषा शिक्षण की पद्धतियों में नवीनता, विविधता व विस्तार लाने की आवश्यकता है। आज भाषा की कक्षा केवल कक्षा की चारदीवारी या पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रह गई है बल्कि घर-परिवार, परिवेश, इंटरनेट और मीडिया के माध्यम से उसका विस्तार दूर तक हो चला है। सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं के संदर्भ में इस विस्तार को समझने तथा इसके विविध आयामों को एक-दूसरे से जोड़ने की आवश्यकता है। भाषा शिक्षण के संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात यह भी है कि भाषा ज्ञान की सतत प्रक्रिया हमारे पूरे परिवेश (जिसमें घर, पास-पड़ोस, सामाजिक समुदाय तथा विद्यालय सभी शामिल हैं) में चलती रहती है। यदि हम भाषा की कक्षा को बाहरी परिवेश में उपलब्ध सीखने के अवसरों से सीधे जोड़ सकें तो भाषा शिक्षण के लक्ष्यों को बखूबी प्राप्त किया जा सकता है।

संध्या सिंह
प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं
संयोजक, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह, हिंदी
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्



मिल-जुल कर स्कूल में जाएँ, साथ पढ़ें और
साथ में खाएँ। रंग-बिरंगी प्यारी दुनिया,
साथ मिलकर इसे सजाएँ।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

महेश चंद्र पंत, कुलाधिपति, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (अध्यक्ष)

मञ्जुल भार्गव, प्रोफेसर, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (सह-अध्यक्ष)

सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद

बिबेक देबरॉय, अध्यक्ष, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

शेखर मांडे, पूर्व महानिदेशक, सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

सुजाता रामदोरई, प्रोफेसर, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा

शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई

यू. विमल कुमार, निदेशक, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरु

मिशेल डैनिनो, विजिटिंग प्रोफेसर, आई.आई.टी., गांधीनगर

सुरीना राजन, आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.पी.ए.

चमू कृष्ण शास्त्री, अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय

संजीव सान्याल, सदस्य, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)

एम.डी. श्रीनिवास, अध्यक्ष, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज़, चेन्नई

गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

रेबिन छेत्री, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम

प्रत्यूष कुमार मंडल, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दिनेश कुमार, प्रोफेसर, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

रंजना अरोड़ा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.,

नई दिल्ली (सदस्य-सचिव)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिए

दृढसंकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख
26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

मार्गदर्शन

महेश चंद्र पंत, अध्यक्ष, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समूह,
(एन.एस.टी.सी.) तथा भाषा समूह

मञ्जुल भार्गव, सह-अध्यक्ष, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समूह,
(एन.एस.टी.सी.) तथा भाषा समूह

अध्यक्ष, उप-समूह (हिंदी)

चमन लाल गुप्त, प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला

सहयोग

अक्षय कुमार दीक्षित, हिंदी अध्यापक, आचार्य तुलसी सर्वोदय बाल विद्यालय, छतरपुर,
नई दिल्ली

अनुराधा, हिंदी शिक्षक (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, लोधी स्टेट, नई दिल्ली

आर.एस. सराजू, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

नंद किशोर पाण्डेय, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

नीरा नारंग, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

नीलकंठ कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

प्रणय कुमार, अध्यक्ष, हिंदी, संस्कृत विभाग, एल.के. सिंघानिया एजुकेशन सेंटर, गोटन

मंजरी शुक्ला, लेखक, प्रयागराज

मृदुल कीर्ति, लेखक, मेरठ

मैथिली प्र. राव, शिक्षाविद एवं अनुवादक, बेंगलुरु

राम प्रसाद भट्ट, हैमबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

विश्वामित्र दायमा, शिक्षक, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, लालपुरा, चित्तौड़गढ़

शचींद्र आर्य, अध्यापक, राजकीय सह-शिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (गाँधी) ब्रह्मपुरी, नई दिल्ली

शारदा कुमारी, प्राचार्य (सेवानिवृत्त), डी.आई.ई.टी., आर.के. पुरम, सेक्टर-7, नई दिल्ली

शिव शरण कौशिक, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर

श्याम सिंह सुशील, लेखक, हिंदी, ए-13, दैनिक जनयुग अपार्टमेंट्स, वसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली

साकेत बहुगुणा, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान-दिल्ली केंद्र, नई दिल्ली

सुमन कुमार सिंह, शिक्षक, गवर्मेन्ट सेकेण्डरी स्कूल कौड़िया, वसंती भगवानपुर हाट, सिवान

सैयद मतीन अहमद, अध्यक्ष, हिंदी, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना

सदस्य-समन्वयक एवं संयोजक

संध्या सिंह, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग एवं संयोजक पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (हिंदी भाषा उप-समूह), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य सह-समन्वयक

नरेश कोहली, एसोसिएट प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों; पाठ्यचर्चा क्षेत्र समूह भाषा के सभी सदस्यों तथा अन्य अंतःसंबंधी विषयों के लिए गठित पाठ्यचर्चा क्षेत्र समूहों के अध्यक्षों एवं सदस्यों के प्रति इस पुस्तक के निर्माण की प्रक्रिया में मार्गदर्शन एवं समीक्षा हेतु बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक के निर्माण में जिन रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसकी स्वीकृति देने के लिए सभी रचनाकारों, उनके परिजनों एवं उनसे संबद्ध प्रकाशकों के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, भाषा शिक्षा विभाग के वंदना शर्मा, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, गिरीश कुमार तिवारी, *असिस्टेंट प्रोफेसर*; रमेश कुमारी, *वरिष्ठ शोध सहायक*; कनिष्ठ परियोजना अध्येता सुनीत मिश्र, शुभम सिंह, प्रिया और सत्यम सिंह; तकनीकी सहयोग हेतु संविदा पर कार्यरत डी.टी.पी. ऑपरेटर अमजद हुसैन और फरहीन फातिमा; तथा संविदा पर कार्यरत प्रूफ रीडर सोनम सिंह और राम भवन यादव का हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद् इस पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए प्रकाशन प्रभाग के प्रति आभारी है। परिषद् पाठ्यपुस्तक के संपादन के लिए दिनेश वशिष्ठ, *संपादक (संविदा)*; प्रियंका, *प्रूफरीडर (संविदा)* और पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप से तैयार करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; संविदा पर कार्यरत डी.टी.पी. ऑपरेटर राजश्री सैनी और बिट्टू कुमार महतो, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. प्रति भी आभार प्रकट करती है।

मल्हार

‘मल्हार’ भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक राग है। यह मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में गाया जाता है। वर्षा ऋतु में प्रकृति नूतन रूप धारण करती है। इस ऋतु का संबंध सृजन, सौंदर्य, नयेपन और कृषि से भी है। यह पुस्तक ‘मल्हार’ भी अपने गठन, विषयवस्तु और गतिविधियों में सृजन, सौंदर्य और नयेपन पर बल देती है।

विषय-क्रम

आमुख		iii
यह पुस्तक		v
भाषा संगम		xx
(तमिल कविता का हिंदी अनुवाद)		
1. मातृभूमि (कविता)	सोहनलाल द्विवेदी	1
पुष्प की अभिलाषा (पढ़ने के लिए)	माखनलाल चतुर्वेदी	12
2. गोल (संस्मरण)	मेजर ध्यानचंद	13
एक दौड़ ऐसी भी (पढ़ने के लिए)		24
3. पहली बूँद (कविता)	गोपालकृष्ण कौल	25
4. हार की जीत (कहानी)	सुदर्शन	33
5. रहीम के दोहे (दोहे)	अब्दुरहीम खानखाना	45
6. मेरी माँ (आत्मकथा)	रामप्रसाद 'बिस्मिल'	51
7. जलाते चलो (कविता)	द्वारिका प्रसाद 'माहेश्वरी'	60
8. सत्रिया और बिहू नृत्य (निबंध)	जया मेहता	75
9. मैया मैं नहीं माखन खायो (पद)	सूरदास	94
10. परीक्षा (कहानी)	प्रेमचंद	105
11. चेतक की वीरता (कविता)	श्यामनारायण पांडेय	122
12. हिंद महासागर में छोटा-सा हिंदुस्तान (यात्रा वृत्तांत)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	128
13. पेड़ की बात (निबंध)	जगदीशचंद्र बसु	145
आओ बच्चो तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की (पढ़ने के लिए)	कवि प्रदीप	155
शब्दकोश		157
पहेलियों के उत्तर		165

भाषा संगम

भारतवर्ष

अखिल विश्व में अतुलनीय उत्कर्ष !

हमारा भारतवर्ष !

ज्ञान और विज्ञान, अर्थ-परमार्थ-ध्यान;

मान, आत्म-सम्मान, प्राण, धन-धान्य-दान;

सुधा सिंधु रस-गान, काव्य-कृतियाँ महान;

सब-कुछ जिसका है जग का आदर्श !

हमारा भारतवर्ष !

अखिल विश्व में अतुलनीय उत्कर्ष !

हमारा भारतवर्ष !

— सुब्रह्मण्य भारती

(तमिल कविता का हिंदी अनुवाद)